P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-4* ISSUE-2* (Part-2) May- 2019
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

समसामयिक विश्व में सर्वोदय एवं गाँधीवाद की अवधारणा की प्रासंगिकता (भारत के विशेष सन्दर्भ में एक संक्षिप्त अध्ययन)

इरसाद अली खाँ
सह आचार्य,
राजनीति विज्ञान विभाग,
राजकीय बाँगड़ पी.जी.
महाविद्यालय,
डीडवाना, राजस्थान, भारत

सारांश

विश्व कवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने गांधीजी को महात्मा की उपाधि से विभूषित किया था। सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक अलबर्ट आइन्सटीन ने महात्मा गांधी के बारे में कहा था कि आने वाली पीढ़ियाँ बमुश्किल यह विश्वास करेगी कि हाड़–मांस का ऐसा भी कोई आदमी इस धरती पर चलता–फिरता था। मोहनदास करमचंद गांधी का नाम विश्व के उन महानतम् व्यक्तियों में आता है, जिन्होंने सत्य–अहिंसा के आधार पर राजनीतिक चेतना जागृत करने का प्रयास किया। गांधीजी ने मानव मात्र के लिए सत्य और अहिंसा का जो रास्ता दिखाया, वही गांधीवादी दर्शन का आधार बना। वर्तमान समाज में जिस तरह से राजनीति का विकास हुआ तथा हिंसा का प्रयास बढ़ा, सत्ता–सम्पत्ति , धन–वैभव के प्रति जितनी मांग बढ़ी है, वह किसी से छुपी नहीं है। नैतिक मूल्यों का ह्रास, जाति व धर्म के प्रति उन्माद पैदा होना, सद्भाव, प्रेम, भाईचारा, सेवाभाव के प्रति लोगों की आस्था खत्म होती नजर आ रही है। ऐसे समय में गांधीवाद की प्रासंगिकता अनायास हो जाती है।

सर्वोदय के माध्यम से गांधीजी विश्व कल्याण चाहते थे। गांधीजी के शिष्य जो उनके जीवन काल में ही इस विचारधारा और चिन्तन पर कार्य करने लगे। आचार्य विनोबा भावे, श्री जयप्रकाश नारायण, दादा धर्माधिकारी, काका कालेलकर एवं आचार्य कृपलानी के नाम विशेष रूप से आते हैं। सर्वोदय के संबंध में प्रो. जे.पी.सुद ने लिखा है कि ''सर्वोदय समाज में विषमता का स्थान समानता ले लेगी, प्रतिस्पर्द्धा के स्थान पर सहयोग आ जायेगा और घृणा–संघर्ष के स्थान पर प्रेम व सद्भावना का साम्राज्य होगा।'' सर्वोदय वास्तव में गांधीवाद का ही संशोधित रूप है। गांधीजी ने जो राजनीतिक, सामाजिक व आर्थिक विचार प्रकट किये थे, उन्हें देश की परतंत्रता के कारण व्यावहारिक रूप नहीं दिया जा सका। विनोबा भावे ने गांधीजी की हत्या के पश्चात् व्यावहारिक रूप देने के उद्देश्य से सर्वोदय समाज की स्थापना की थी। आज के आधुनिक युग में गांधीवाद व सर्वोदय अत्याधिक आवश्यक है।

मुख्य शब्द : सर्वोदय, गांधीवाद, सत्य, अहिंसा, सत्याग्रह, रामराज्य, न्याससिद्वान्त, सर्वोदय, दलितोद्धार, आंतकवाद,मॉबलिचिंग, चुगली, अन्नपूर्णा, आयुष्मान, एकात्मक मानववाद, ग्राम–दान, भू–दान इत्यादि।

प्रस्तावना

गाँधीवाद व सर्वोदय को समझने से पहले गाँधीजी का जीवन परिचय को संक्षिप्त वर्णन करना आवश्यक है। गांधीजी का वास्तविक नाम मोहनदास करमचंद गांधी था। उनका जन्म 2 अक्टुबर, 1869 ई. को गुजरात के कठियावाड़ क्षेत्र के पोरबंदर नामक स्थान पर हुआ। गांधीजी का का विवाह कस्तूरबाबाई से हुआ। उनकी प्रारम्भिक शिक्षा पोरबंदर में ही पूर्ण हुई परन्तु बाद में वे अध्ययन करने के लिए इंगलैण्ड चले गये। इंग्लैण्ड में शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् वकालत करने दक्षिण अफ्रीका गये। 1915 ई. में गांधीजी पुनः भारत लौट आये। 1920 ई. में असहयोग आन्दोलन, 1930 ई. में सविनय अवज्ञा आंदोलन एवं 1942 ई. में भारत छोड़ों आन्दोलन चलाया। विभाजित भारत की स्वतंत्रता, जिसका गांधीजी ने भरपूर विरोध किया और उन्होने कहा ''भारत का विभाजन मेरी लाश पर होगा।'' गांधीजी ने अपने जीवन के अनेक ग्रंथ, पुस्तकें, लेख, पत्रिकाएं छापी, जो आज विश्व की धरोहर के रूप में जानी जाती है। महात्मा गांधी भारतीय स्वाधीनता आंदोलन के पितामह थे। यदि उनको अपने समय का अर्थशास्त्री, समाजशास्त्री, दार्शनिक, वैद्य ,शिक्षाविद, समाज सुधारक, राजनीतिज्ञ, पत्रकार, लेखक, कानूनविद, साहित्यकार, सौंदर्य शास्त्र,संत,संयासी कहा जाये तो कोई

अतिश्योक्ति नहीं होगी। मूल रूप से गांधीवादी पद्वति का विभाजन दक्षिण अफ्रिका में 1906 ई. के बाद हुआ था और गांधीजी के द्वारा समाज को सर्वोदय दर्शन के रूप में एक महत्वपूर्ण विचार प्राप्त हुआ। उनकी मृत्यु 30 जनवरी 1948 ई. को नई दिल्ली में नाथूराम गोडसे द्वारा चलायी गयी गोली से हुई थी। गाँधीजी द्वारा जो विचार व्यक्ति किये गये, उन्हें विद्वानों ने गाँधीवाद का नाम दिया, जिसमें सर्वोदय भी एक विचार समाहित है। वर्तमान में वीकीपिडिया की तरह ही गाँधीपीडिया बनाना आवश्यक और अपरिहार्य होता जा रहा है। जिसका वर्तमान केन्द्र सरकार ने प्रयास शुरू कर दिया है जो कि एक सराहनीय कदम है।

शोध पत्र का उद्देश्य

सर्वोदय एवं गाँधीवाद की अवधारणा को विशेष रूप भारत के सन्दर्भ में अध्ययन किया गया एक संक्षिप्त है, – जिसके निम्न लिखित उद्देश्य है

1. सर्वोदय का अभिप्राय, परिभाषा को गाँधीवाद के परिप्रेक्ष्य में ज्ञात करना।
2. सर्वोदय के आधारों को ज्ञात करना।
3. गाँधीवाद एवं सर्वोदय के तहत गाँधीजी का परिचय एवं अनेक ग्रन्थों का उन पर प्रभाव एवं स्वरचित ग्रन्थों का संक्षिप्त आंकलन करना।
4. सर्वोदय के उपायों को वर्तमान परिदृश्य के तहत ज्ञात करने का प्रयास करना।
5. सर्वोदय एवं गाँधीवाद के तहत भारतीय की वर्तमान की जटिल समस्याओं को हल करने का प्रयास करना।
6. सर्वोदय एवं गाँधीवाद के तहत भारत की वर्तमान सरकार के द्वारा किये कार्यों को ज्ञात करना एवं इसमें सुधार की गुंजाइश को सम्मिलित करते हुए हल करने का प्रयास करवाना।
7. बढ़ी हुई असमानता, बेरोजगारी, गरीबी, भूखमरी, आधुनिकीकरण की बुराइयों को रोकने एवं इन समस्याओं को हल करने का सर्वोदय एवं गाँधीवाद एक सरल एवं स्टीक प्रयासों को लागू कर हल करवाने का प्रयास।
8. अन्य विचारधाराओं की तुलना करते हुए सर्वोदय एवं गाँधीवाद के विचारों को स्पष्ट करते हुए, सभी समस्याओं को हल करने का प्रयास करना।
9. वर्तमान में (भारत के विशेष सन्दर्भ में) धार्मिक, जातिय, बहुसंख्यक एवं अल्पसंख्यकों को बढ़ती हुई खाई को सर्वोदय एवं गांधीवाद के विचारों के माध्यम से पाटने (हल) का प्रयास करना इत्यादि।

शोध प्रविधि

एक अध्ययन विषय तथा व्यवस्था के रूप में वैज्ञानिक अनुसंधान द्वारा अभिवृद्धि हेतु शोध प्रविधि का निर्धारण किया गया है। इस शोधपत्र में एक वैज्ञानिक योजना के तहत तार्किक तथा क्रमबद्व पद्वतियों के द्वारा नवीन तथ्यों का अन्वेषण तथा पुराने तथ्यों की पुनः समीक्षा एवं उनमें पाये जाने वाले अनुक्रमों में अन्तः सम्बन्धों को कारण सहित व्याख्याओं और उनको संचालित करने वाली स्वाभाविक नियमों का विश्लेषण सर्वोदय एवं गांधीवाद के सिद्वान्तो पर व्यक्त किया गया है।

इस शोधपत्र में प्राथमिक एवं द्वितीयक स्त्रोतो में विशेष रूप से द्वितीयक स्त्रोतों के माध्यम से सूचनाएं एवं आंकड़ों को संग्रहण करने के लिए दस्तावेजों तथा प्रलेखों, सूचनाओं का अध्ययन, समाचार–पत्र, वैबसाइड से यथास्थान पर इस शोधपत्र में समावेशन किया गया है। इस शोधपत्र में अवलोकन परस्पर सम्पर्क एवं अनुभुति जन्यज्ञान के आधार पर सर्वोदय एवं गांधीवाद का अध्ययन किया गया है। शोध पत्र में व्यक्तिवृत अध्ययन के तहत गांधीवाद एवं सर्वोदय का अध्ययन विशेष रूप भारत की वर्तमान वास्तविक स्थिति के ऊपर एक संक्षिप्त अध्ययन किया गया है।

साहित्यावलोकन

किसी भी सामाजिक विज्ञान के विषय में शोध कार्य प्रारम्भ करने से पूर्व उसके सन्दर्भ में विस्तृत जानकारी एवं वस्तुस्थिति को ज्ञात करने के लिए सम्बन्धित विषय में पूर्ण उपलब्ध, लिखित, प्रकाशित, अप्रकाशित, शिलालेखों, लेखों का अध्ययन करना आवश्यक है, जिसके तहत इस शोध पत्र को तैयार करने से पूर्व अनेक ग्रंथों, लेखों, पत्र–पत्रिकाओं का अध्ययन करना अति आवश्यक समझा गया, जिसके सन्दर्भ में पूर्ण विवरण देना, सूक्ष्म तरीके से न देते हुए कुछ का उल्लेख किया गया। इसके तहत ऐसे किसी अभिनव पक्ष पर अनुसंधान की आवश्यकता को पूरा करने के लिए प्रारम्भ किया गया है। प्रदीप माथुर '' भारतीय राजनीतिक विचार'' जयपुर, प्रथम संस्करण 2010 पु. 52–95 एवं पृ. 125–135, गाँधीवाद एवं सर्वोदय का उल्लेख किया गया है। डॉ. पुखराज जैन ''प्रतिनिधि भारतीय राजनीतिक विचारक साहित्य भवन पब्लिकेशन, आगरा 2018 पृ. 142–169 में महात्मा गाँधी के अध्याय में गाँधीवाद एवं सर्वोदय का उल्लेख किया गया है। डॉ. राधेश्याम कौशिक एवं डॉ. मुख्त्यार अली''राजनीति शास्त्र के मूल सिद्वान्त (सं. प्रो. धर्मचन्द जैन, जैन विश्व भारती संस्थान लाडनूं, नवीन संस्करण 2017 पृ. 201–204 में सर्वोदय की व्याख्या अभिप्राय, साधन, आधार, विकास का उल्लेख सुस्पष्ट तरीके से किया गया है। इनके अतिरिक्त अनेक पुस्तकों में सर्वोदय एवं गाँधीवाद का उल्लेख है परन्तु शोध पत्र को कुछ अलग तरीके से बनाकर तैयार करने का एक सफल प्रयास किया गया है।

सर्वोदय एवं गाँधीवाद का अभिप्राय

सभी की भलाई

शाब्दिक अर्थ में सर्वोदय को हम सर्व + उदय अर्थात् सभी का उदय से लेते हैं। दादा धर्माधिकारी ने माना कि ''सबका उदय, सबका उत्कर्ष, सबका विकास ही सर्वोदय है।'' वे आगे कहते हैं कि ''सर्वोदय ऐसे वर्गविहीन, जाति विहीन तथा शोषणविहीन समाज की स्थापना करना चाहते हैं, जिसमें प्रत्येक व्यक्ति व समूह को अपने सर्वांगीण विकास के साधन और अवसर मिलेंगे। ऐसी क्रांति अहिंसा व सत्य द्वारा ही संभव है। सर्वोदय इसी का प्रतिपादन करता है।'' आचार्य विनोबा भावे ने सर्वोदय के सन्दर्भ में लिखा है कि '' सर्वोदय कुछ लोगों का अथवा बहुत से लोगों का अधिकतम लोगों का उत्थान नहीं चाहता है। हम अधिकतम के अधिक सुख से संतुष्ट

नहीं हैं। हम तो केवल एक की या सबकी, ऊँचे और नीचे को, सबल और निर्बल की, बुद्विमान और बुद्धिहीन की भलाई से संतुष्ट नहीं हो सकते हैं। हम केवल तभी संतुष्ट हो सकते हैं जब सभी की भलाई हो। सर्वोदय शब्द से इस उच्च और सर्वत्यागी भावना का बोध होता हैं।'' विनोबा भावे चाहते थे कि धनवान लोग अपनी अपार सम्पत्ति से अपनी आवश्यकता से अधिक सम्पत्ति का परित्याग कर दें तो वे ऊपर उठ सकेंगे। जिससे गरीब लोगों की दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति हो सकेगी। इस प्रकार से दोनों वर्गों को नैतिक व आध्यात्मिक दृष्टि से आगे बढ़ने का मौका मिल सके।

सब कुछ समाहित

सर्वोदय शब्द गांधी द्वारा प्रतिपादित एक ऐसा विचार है जिसमें ''सर्वभूत हितेशाः'' की भारतीय कल्पना, सुकरात की सत्य साधना और रस्किन की अंत्योदय की अवधारणा सब कुछ सम्मिलित है। गांधीजी ने एक बार कहा था कि ''मैं अपने पीछे कोई पंथ या संप्रदाय नहीं छोड़ना चाहता हूँ।'' यही कारण है कि सर्वोदय आज एक समर्थ जीवन समग्र जीवन तथा संपूर्ण जीवन का पर्याय बन चुका है।

सबका उदय अर्थात् सर्वांगीण विकास

सर्वोदय एक सामाजिक शब्द है जो 'सर्व' और उदय के योग से बना है। सर्वोदय एक ऐसा अर्थवान शब्द है जिसका जितना अधिक चिंतन और प्रयोग हम करेगें उतना ही अधिक अर्थ उसमें पाते जायेंगे। सर्वोदय शब्द के दो अर्थ प्रमुख है– सर्वोदय अर्थात् सबका उदय। अथवा सर्वागीण विकास इसका अर्थ अलग–अलग दृष्टिकोण से अलग–अलग है जैसे भौतिकवादी अपनी बढ़ी हुई आवश्यकता की पूर्ति में लगा रहता है।

आध्यात्मिक भाईचारा

वर्तमान में सर्वोदय का संपूर्ण शास्त्र विकसित हो रहा है उसकी राजनीति, अर्थनीति, शिक्षानीति, धर्म, दर्शन इत्यादि सर्वोदय समाज नामक आस्था रखने वालों का एक आध्यात्मिक भाईचारा भी बनाता है और सर्व सेवा संघ नामक संस्था भी है। डॉ. राममनोहर लोहिया ने गांधीवादी विचार एवं प्रवृतियों को बहुत ही नजदीक से देखा था। उनका मानना था कि 1916 ई. से चले गांधीजी का सर्वोदय 1948 ई. (गांधीजी की हत्या के बाद) में तीन प्रकार हो चुका है। ये हैं– सरकारी गांधीवादी, मठी गांधीवादी और कुजात गांधीवादी।

सर्वसेवा एवं नैतिक जीवन

विनोबा भावे के अनुसार ''सर्वोदय का अर्थ है सर्व सेवा के माध्यम से प्राणियों की उन्नति। हम अधिकार के सुख में नहीं सबके सुखी होने से संतुष्ट है। हम ऊंच–नीच ,अमीर–गरीब सबकी भलाई से संतुष्ट हो सकते हैं।'' किशोरी लाल मशरूवाला के अनुसार ''गांधीवाद को हम सर्वोदयवाद तथा सत्याग्रह मार्ग कह सकते है।'' काका साहेब कलालकर के अनुसार ''गांधीवाद को गांधी मार्ग' या गांधी दृष्टि कहा जा सकता है। आचार्य डॉ. बी. कृपलानी के अनुसार''गांधीवाद को गांधी विचार न कहकर गांधीवाद' ही कहना ठीक होगा। प्रसिद्व मार्क्सवादी विचारक यशपाल के अनुसार''गांधी के विचारों को गांधीवाद ही कहना ठीक होगा। नैतिक जीवन में सहजीवन अपने आप में बड़ा मूल्य है। जिस व्यवहार की अपेक्षा हम खुद करते है वही बर्ताव दूसरो के साथ भी करें।

विनोबा भावे के अनुसार ''सर्वोदय का अर्थ है सर्व सेवा के माध्यम से प्राणियों की उन्नति। हम अधिकार के सुख में नहीं सबके सुखी होने से संतुष्ट है। हम ऊंच–नीच, अमीर–गरीब, सबकी भलाई से संतुष्ट हो सकते है।'' किशोरी लाल मशरूवाला के अनुसार ''गांधीवाद को हम सर्वोदयवाद तथा सत्याग्रह मार्ग कह सकते हैं।'' काका साहेब कालेलकर के अनुसार ''गांधीवाद को गांधी मार्ग' या गांधी दृष्टि कहा जा सकता है।'' आचार्य डॉ. बी. कृपलानी के अनुसार''गांधीवाद को गांधी विचार न कहकर गांधीवाद' ही कहना ठीक होगा।'' प्रसिद्ध मार्क्सवादी विचारक यशपाल के अनुसार''गांधी के विचारों को गांधीवाद ही कहना ठीक होगा।'' अर्थात् गाँधीजी के सम्पूर्ण विचारों को हम गाँधीवाद कहे तो इसमें कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी।

सर्वोदय का विकास

सर्वोदय सिद्वान्त कोई नया नहीं अपितु इसका प्राचीनतम समय के ग्रंथो में भी इसका उल्लेख मिलता है। जहाँ प्राचीन भारतीय मनीषियों ने विचार दिया है कि विश्व का कल्याण किसी विशेष देश या विशेष वर्ग के कल्याण में नहीं वरन सबके कल्याण में निहित है। गांधीजी ने सर्वोदय का उल्लेख आधुनिक रूप में दिया। सर्वोदय शब्द का प्रयोग स्वयं गांधीजी ने किया था। रस्किन की पुस्तक ''Un to this last" का गांधीजी पर विशेष प्रभाव पड़ा था। इस पुस्तक के तीन महत्वपूर्ण निष्कर्ष में 1. वह आर्थिक व्यवस्था उत्तम है, जिसमें सभी को लाभ पँहुचे। 2. वह वकील के कार्य और नाई के कार्य का मूल्य समान है, कारण यह है कि प्रत्येक को अपने कार्यानुसार जीविका अर्जित करने का अधिकार है। 3. श्रमिक , खेतीहर और हस्त–शिल्पी का जीवन ही सच्चा जीवन है।

गांधीजी ने अपनी आत्मकथा में लिखा है कि जिस पुस्तक ने मेरे जीवन में तत्काल महत्वपूर्ण परिवर्तन कराया, वह तो रस्किन की Unto this last ही थी। उसे हाथ में लेने के बाद में छोड़ न सका। उसने मुझे पकड़ लिया। ट्रेन में मैने उसे पढ़ डाला। घर पंहुचने पर मुझे सारी रात नींद नहीं आई। पुस्तक में बताये गये विचार तुरन्त अमल में लाने का मैंने इरादा किया। गांधीजी ने Unto this last का अनुवाद गुजराती में किया, जिसे बाद में सर्वोदय नाम दिया। 1938 ई. में गांधी सेवा संघ की ओर से एक मासिक पत्रिका प्रकाशित हुई, जिसका नाम ''सर्वोदय'' रखा गया। गांधीजी की पुस्तक ''सर्वोदय'' के सन्दर्भ में काका कालेलकर ने लिखा कि ''रस्किन ने जो कुछ भी लिखा, समस्त विश्व के लिए लिखा परन्तु गांधीजी ही उसके अनुसार चल सके। उन्होंने रस्किन से प्रेरणा लेकर सर्वोदय में जो कुछ लिखा उस पर गांधीजी का विश्वास था कि पूरा विश्व उसके अनुसार चले या न चले, हिंदुस्तान तो चलेगा ही और यदि एक भी राष्ट्रनीति की राह पर चलेगा तो इसका प्रभाव सारी मानव जाति पर अवश्य ही होगा। सर्वोदय की भावना के तहत ही गाँधीजी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए भारत को विश्व का प्रमुख देश बनाने की अहम भूमिका निभाने का सपना पूरा करने

का प्रयास किया, केन्द्र एवं राज्य सरकारों के बजट में एवं कार्यशैली में अब गाँधीजी के विचारों को धरातल पर उतारने का सफल प्रयास जारी है।

सर्वोदय एवं गाँधीवाद में निम्नलिखित तत्व विहीन होंगे

दल विहीन	स्वार्थ विहीन	आतंक विहीन
राज्य विहीन	भ्रष्टाचार विहीन	स्वाद विहीन
शोषण विहीन	अस्पृश्यता विहीन	हथियार विहीन
संग्रह विहीन	वर्ग विहीन	साम्राज्यवादी विहीन
हिंसा विहीन	अमीर विहीन	रंग विहीन
घृणाविहीन	गरीब विहीन	जाति विहीन
संघर्ष विहीन	सम्प्रदाय विहीन	अय्यासी विहीन

सर्वोदय एवं गांधीवाद में इन तत्वों का होना अनिवार्य है–

1. शारीरिक श्रम की अनिवार्यता,
2. आर्थिक समानता की अनिवार्यता,
3. सर्वोंगीण विकास की अनिवार्यता,
4. इन्द्रिय निग्रह की अनिवार्यता,
5. नये समाज के निर्माण की अनिवार्यता,
6. प्राथमिक इकाई ग्राम पंचायत की अनिवार्यता,
7. त्याग द्वारा हृदय परिवर्तन की अनिवार्यता,
8. मशीनों एवं भारी उद्योगों का विरोध की अनिवार्यता,
9. ट्रस्टीशिप एवं अपरिग्रह की अनिवार्यता,
10. राज्य का उन्मूलन की अनिवार्यता,
11. दलों का अभाव की अनिवार्यता,
12. सत्याग्रह मार्ग की अनिवार्यता,
13. सत्य एवं अहिंसा की अनिवार्यता,
14. समस्याओं का विश्वसनीय निदान की अनिवार्यता इत्यादि।

सर्वोदय के आधार

इन्द्रिय निग्रह

भारत में प्रतिदिन अत्याचार, मॉबलिचिंग, लव जिहाद के नाम हिंसा, आंतकवाद, बलात्कार, हत्या, डकैती, भ्रष्टाचार, धन इकट्ठा करने की प्रवृति, नेताओं की झूठ बोलने की आदत , दूसरों की भाषणो की आदत , गलत संगत, महिलाओं पर अत्याचार, तलाक का मुद्दा, बढ़ती मंहगाई, जातिय एवं साम्प्रदायिक हिंसा, झुठीशान–शौकत में पड़ना, चुगली करना, कार्य के प्रति समर्पित न होना इत्यादि में बढ़ोतरी को रोकने के लिए हम सर्वोदय की तरफ बढना पड़ेगा। अतः इस कारण सर्वोदय का पहला आधार इन्द्रिय निग्रह है। सर्वोदय के माध्यम से मानव के दुर्गुणों को नष्ट किया जा सकता है। इन्द्रियनिग्रह के द्वारा ही क्रोध,मोह,लोभ,लालच इत्यादि जैसे दुर्गुणों से छुटकारा पाया जा सकता है। आचार्य विनोबा भावे ने कहा कि बुरी आदतों के कारण संयम रखना कठिन होता है। नहीं तो यह साधारण सी बात है। जो बात कछुआ जानता है उसे मनुष्य क्यों नहीं जानेगा ? जहाँ खतरा हो वहाँ इन्द्रियों को समेट लेना और जहाँ नहीं है, उन्हें खुला छोड़ देना कछुआ जानता है। मनुष्य के लिए यह कोई कठिन बात नहीं है कि जितनी भूख है उतना खाना, प्यास लगने पर पानी पीना, परन्तु न तो अधिक खाना, न अधिक सोना। क्या ये कठिन बाते हैं ? जिनके लिए हमको अभ्यास करना पड़े? परन्तु गलत शिक्षा दी जाती है इसलिए यह भारी समस्या मालूम होती है। सर्वोदय विचार में यह तत्व मुख्य है कि अपने मन को वश में रखना चाहिए, इन्द्रियों को नियंत्रण में रखना चाहिए।

नये समाज का निर्माण

सर्वोदय ही है जिससे एक आदर्श नये समाज का निर्माण करना है। समाज के लोगों में परस्पर कितना विरोध है ? और इस कारण समाज में अनेक संघ बने हुए है। इस सन्दर्भ में आचार्य विनोबा भावे ने लिखा है ''यह जो अल्पसंख्या व बहुसंख्या का विचार चला है उसका बहुत भयंकर परिणाम हो रहा है। इससे करोड़ों रूपया खर्च हो रहा हैं। इसमें गरीबों का कोई स्थान नहीं है। जाति भेद तो इतना बढ़ गया है कि साम्यवादियों में जो चीज नहीं थी, उनमें भी वह आ गई है। कितनी भयानक बात है, जिस जाति भेद पर राजा राममोहन राय से लेकर गांधीजी तक निरन्तर प्रहार होता रहा है और जो मरने की तैयारी में था, वही इस लोकतांत्रिक निर्वाचन के कारण अल्पसंख्यक व बहुसंख्यक के कारण बढ़ रही है। इसे लोकतंत्र का वरदान समझिये। इसलिए हमको एक नये सिरे से रचना करनी होगी नया समाजशास्त्र बनाना होगा। जैसी शिक्षण शास्त्र होता है वैसा समाज शास्त्र होता है। इसलिए शिक्षण शास्त्र में परिवर्तन करना होगा।''अब एक ही कमी है और वह है अखिल भारतीय बाप–संघ और अखिल भारतीय बेटा–संघ। वर्तमान लोकतांत्रिक एवं निर्वाचनिक व्यवस्था की निन्दा करते हुए कहा है कि ''यह जो निर्वाचन होते है, उसका अपना पृथक धर्म विचार है। उसके तीन सिद्वान्त हैं आत्म स्तुति, परनिन्दा और झूठा भाषण।'' आगे उन्होंने यह कहा कि वर्तमान समय में भाषण–बाजी ज्यादा और काम नहीं करने की राजनीति दलों में बढ़ती जा रही है। चुनावों से पहले के घोषणा–पत्रों एवं जीतने के पश्चात् उन घोषणा–पत्रों के हिसाब से कार्य नहीं होते हैं तो उसे जूमला बताना जिससे आम जनता अपने आपकों ठगा सा महसूस करती है। अल्पसंख्या की खुशी से कोई मतलब नहीं क्योंकि वोट बैंक तो बहुसंख्या है। अतः बहुसंख्या को खुश रखने की रणनीति चल रही है और सत्ता में बने रहने या सत्ता में आने की भरपूर कोशिश चल रही है। सत्ता में आने के लिए सभी प्रकार के हत्थकंडे अपनाये जाते रहे हैं। चुनावों के समय दलों द्वारा परनिन्दा एवं झूठे भाषणों की भरमार मिल जाती है। साफ छवि से चुनावों का आयोजन होना चाहिए, इससे हमें धर्म, जाति से ऊपर उठकर एक सुदृढ़ भारत का निर्माण में साफ–सुथरी छवि वाले नेताओं को जीताकर गरीबी, भुखमरी, बेरोजगारी इत्यादि को दूर करना चाहिए। शिक्षा के स्तर का भी परिवर्तन करने की आवश्यकता है। वर्तमान केन्द्र सरकार ने नई शिक्षा नीति के सतत् प्रयासरत है। जिससे ऐसे समाज की स्थापना हो सके, जिसमें सत्य और अहिंसा हो। ऐसे समाज में प्रत्येक नागरिक शारीरिक श्रम करें। कृषि कार्य भी करे। आचार्य विनोबा भावे ने यहाँ तक कहा हैं कि हमारा प्रधानमंत्री भी चार घण्टे खेती करेगा और चार घण्टे दूसरा काम करेगा। ऐसी व्यवस्था से समाज में भोजन की कमी नहीं रहेगी। सर्वोदयी विचारधारा परम्परागत के साथ ही आधुनिक विज्ञान का भी प्रयोग सबके उदय के लिए करना चाहती है। आचार्य विनोबा भावे ने कहा है कि ''हम चाहते हैं

विज्ञान खुब बढ़े परन्तु हम यह भी चाहते है कि उसका ठीक ढंग से उपयोग करने की बुद्धि हममें हो। अग्नि का उपयोग हम अवश्य कर सकते हैं परन्तु अग्नि का उपयोग रसोई बनाने में किया जाये, किसी के मकान में आग लगाने के लिए न किया जाए। विज्ञान की शादी यदि हिंसा के साथ होगी तो मानव का सर्वनाश होगा। इसलिए विज्ञान के साथ अहिंसा की ही शादी होनी चाहिए। अहिंसा और विज्ञान के संयोग ये पृथ्वी पर स्वर्ग उतर आयेगा।'' भारत में मनरेगा, खाद्य सुरक्षा, आयुष्मान भारत जैसी इत्यादि योजनायें ये ऐसे उदाहरण है जिसके तहत अहिंसा और विज्ञान का संमिश्रण है।

राज्य का उन्मूलन अर्थात् राज्यविहीन समाज

सर्वोदय विचारधारा में विशेष रूप से राज्य का उन्मूलन भी है। सर्वोदय में राज्य का विरोध इसलिए होता है कि वह हिंसा और दमन की प्रवृत्तियों का द्योतक है, वह अपनी सत्ता बनाये रखने के लिए प्रशासनिक यंत्रों के लिए जनता पर भारी कर का दबाव डालता है। सरकार के बढते हुए कार्यों से भी सर्वोदयी विचारक नाराज होते हैं। आचार्य विनोबा भावे ने कहा है कि जहाँ तक व्यक्तियों का संबंध है, प्रत्येक को मन व इन्द्रियों पर नियन्त्रण रखने का ज्ञान होना चाहिये। समाज में एक–दूसरे के हितों के साथ एक–दूसरे के हितों का विरोध नहीं है। यह समझकर समाज की रचना करनी होगी। सरकार की बिल्कुल आवश्यकता नहीं है। यह समझकर उसके क्षय का प्रारम्भ आज से करना होगा। सर्वोदयी समाज की स्थापना से ही भ्रष्टाचार खत्म होगा, सभी में समानता लायी जा सकेगी, अमीर–गरीब के बीच की खाई को कम किया जा सकेगा। यदि ऐसी व्यवस्था की स्थापना वर्तमान में की जाती है तो अराजकता का भय भी नहीं रहेगा और अधिकारों का दुरूपयोग भी नहीं होगा।

सामाजिक जीवन का प्रारम्भ (निम्न स्तर ग्राम पंचायत)

सर्वोदयी विचारकों ने ऐसे समाज की स्थापना की कल्पना की है, जिसमें प्रत्येक सामाजिक जीवन की प्राथमिक इकाई हो। ग्राम पंचायत से जन–जीवन का संगठन प्रारम्भ हो। इसके ऊपर क्रमशः थाना पंचायत, जिला पंचायतों, प्रादेशिक पंचायतों तथा राष्ट्रीय पंचायत होगी। भारत में 1993 में 73 वें 74 वें संविधान संशोधन (1993) भारतीय संविधान में 11 वीं व 12 वीं अनुसूची के तहत पंचायती राज व नगरीय संस्थाओं की स्थापना की गई, जिसके लिए अलग से सूची के तहत विषयों पर कार्यों को करने के लिए इन्हें स्वायत्ता प्रदान करता है परन्तु कुछ विषयों पर इन संस्थाओं को आज भी केन्द्र या राज्य सरकार से निर्णय लेकर कार्य करना है। अतः इन संस्थाओं को और अधिक स्वायत्ता की जरूरत है। सर्वोदयी विचारक वर्तमान दलीय प्रणाली की कटु आलोचना करते है।

दल विहीन प्रजातंत्र

सर्वोदयी विचारकों का मत है कि निर्वाचनों के समय दल झूठे–झूठे वायदे तथा प्रचार करके वोट जनता से ले लेते हैं। इस प्रकार से राज्य शक्ति स्वार्थी लोगों के हाथों में चली जाती है। इस कारण ये सर्वोदयी विचारक दल–विहिन प्रजातंत्र की स्थापना चाहते है। आचार्य विनोबा भावे के अनुसार ''निर्वाचनों के स्थान पर मानव की व्यवस्था हो। इसका आश्य यह है कि उम्मीदवार स्वयं वोट न मांगे वरन् मतदाता जिसे सर्वाधिक योग्य समझे, उसे निर्वाचित कर लें। यह दलविहीन प्रणाली का नवीन रूप है। यदि ऐसा वर्तमान युग में हो जाये तो वंशवाद, जातिवाद, धर्मान्ध, क्षेत्रीयता, संकीर्णता, स्त्री–पुरूष में भेद, भय इत्यादि की समाप्ति हो जायेगी और योग्य व्यक्तियों से देश की शासन व्यवस्था में सुधार होगा और जनहित के कार्य ज्यादा से ज्यादा होंगे।

आर्थिक समानता पर आधारित

गांधीवाद भी सर्वोदय के आर्थिक सिद्वान्तों पर आधारित है। ये आर्थिक समानता पर बल देते हैं। आचार्य विनोबा भावे ने समानता के अर्थ स्पष्ट करते हुए कहा कि ''समानता का यह अर्थ नहीं कि प्रत्येक के पास पांच एकड़ भूमि होनी चाहिये,एक ही प्रकार के मकान और उतने ही गज कपड़ा होना चाहिए। हम यही चाहते है कि हवा,पानी और जमीन जैसी वस्तुएँ जो जीवन के लिए आवश्यक है, सभी को समान रूप से उपलब्ध होनी चाहिए। जब ये वस्तुएँ सभी को पर्याप्त मात्रा में मिल जाती है तो शेष बची हुई में से कोई अधिक ले लेगा तो भी दूसरों को ईर्ष्या नहीं होगी। वर्तमान समय में पहनने के लिए पूरे कपड़ें नही है और यदि कपड़ें है तो रहने के लिए मकान नहीं और एक समय के खाने के अलावा दूसरे समय की खाने की व्यवस्था नहीं है। आंकड़ें चाहे हम कितने भी लें ले परन्तु व्यवस्था अभी भी अधूरी है। जरूर सरकार प्रयासरत है। पं. दीनदयाल द्वारा प्रतिपादित 'एकात्म मानववाद' के सिद्वान्त भी सभी व्यक्तियों की एकात्मा का अनुभव भी सर्वोदय का ही विचार हैं। इसके तहत मनरेगा, खाद्यसुरक्षा, सरकारी वृद्धावस्था पेंशन को शुरू करना, प्रत्येक घर में शौचालय का निर्माण करना।

त्याग के द्वारा हृदय परिवर्तन

सर्वोदय एवं गाँधीवाद ने भारतीय समाज में व्याप्त शोषण, उत्पीड़न, आर्थिक, सामाजिक विषमता पर प्रहार के साथ संयम, अपरिग्रह, त्याग द्वारा संपूर्ण भारत को आलोकित किया। महात्मा गांधी ने अपने सर्वोदय दर्शन के द्वारा संघर्ष कर शुरूआत किया। सर्वोदय कोई सम्प्रदाय नहीं यह तो एक मानव एकता, सेवा तथा समरसता की भावना से समग्र दृष्टि से है, जो पूर्णरूपेण भारतीय चिंतन का पर्याय है। गांधीजी द्वारा प्रतिपादित सर्वोदय विचार में त्याग के द्वारा हृदय परिवर्तन, तर्क एवं अध्यात्म द्वारा वैचारिक परिवर्तन, शिक्षा के द्वारा मानवता का परिवर्तन तथा पुरूषार्थ द्वारा स्तर परिवर्तन पर जोर दिया है। इसमें डॉ. राममनोहर लोहिया की क्रांतियां, लोकनायक जयप्रकाश नारायण का चौखंभा राज्य, मार्क्स की वर्गविहीन व्यवस्था, गांधी का रामराज्य का साक्षात दर्शन होता है। वर्तमान में जहाँ हिंसा, अतिसंग्रह, मतभेद, धर्मांधता, क्षेत्रवाद, जातिवाद, लैंगिक भेदभाव, नस्लभेद तथा राष्ट्रभेद का सर्वत्र नंगा नाच हो रहा है। वहाँ महात्मा गांधी भारतीय संस्कृति के माध्यम से सम्पूर्ण विश्व को बदलने के लिए सत्य और अहिंसा को मुक्त अस्त्र–शस्त्र मानते हैं तथा संपूर्ण समस्याओं का समाधान चाहते हैं। इसके माध्यम से गरीबी, बेरोजगारी, भूखमरी से निपटा जा सकता है तथा राज्य सत्ता, बौद्विक सत्ता का

समन्वय करके सर्वोदय दर्शन को लागू किया जा सकता है।

मशीनों एवं भारी उद्योगों की स्थापना के विरूद्ध

आचार्य विनोबा भावे ने कहा कि ''दूसरों की आवश्यकता का ध्यान रखो और अपनी ऐसी आवश्यकता न रखो, जिससे कि दूसरों को कष्ट होता हो।'' सर्वोदयी विचारधारा औद्योगीकीकरण का स्वागत करती है परन्तु केवल ऐसा औद्योगीकीरण जिससे करोड़ों लोग बेकार न हो जाये। गांधीजी ने कहा था कि ''मैं ऐसी मशीन का स्वागत करूंगा, जो झोपड़ी में रहने वाले करोड़ों सजीव लोगों के बोझ को हल्का कर दे, परन्तु करोड़ों श्रमिकों के स्थान पर निर्जीव मशीन को स्थान कदापि नहीं दिया जा सकता है।'' वर्तमान समाज में बेरोजगारी व गरीबी तथा अमीर–गरीब में बढती खाई (दूरियाँ) का कारण यही औद्योगीकीकरण है और सभी जगह मशीनों ने ले लिया है।'' गांधीजी की ही भांति सर्वोदयी भी मशीनों व भारी–उद्योगों की स्थापना के विरूद्व थे। उनके अनुसार मशीनों से न केवल बेरोजगारी फैलती है वरन् वे व्यक्ति की सृजनशक्ति व कलात्मक प्रवृतियों को नष्ट करती है। दादा धर्माधिकारी ने कहा कि ''विज्ञान परिस्थिति में परिवर्तन कर सकता है, परन्तु जिसे भावरूप मूल्यों की स्थापना कहते हैं, विज्ञान नहीं हो सकती है। यहां तक भारतीय बैंको से 5383 करोड़ रूपये कर्जा लेकर गुजरात की फार्मा कंपनी स्टलिंग बायोटेक का मालिक नितिन जंयतीलाल संदेसरा और उसका पूरा परिवार यूएई से फरार हो गया ऐसा पता चला है कि नाइजीरिया भाग गया। (संसद की प्राक्कलन समिति ने राजन की दी सूची भी मांगीः पीएमओ पूछा बैंको से धोखाधड़ी करने वालो पर क्या कार्यवाही की?)

ट्रस्टीशिप एवं अपरिग्रह

सर्वोदयी विचारकों ने गांधीजी के ट्रष्टीशिप के सिद्वान्त को कुछ संशोधन के साथ स्वीकार कर लिया है। आचार्य विनोबा भावे ने सुझाव दिया कि किसी व्यक्ति को स्वयं की पूंजी का स्वामी नहीं समझना चाहिए। सभी सम्पति ईश्वर की समझनी चाहिए। इस संदर्भ में दादा धर्माधिकारी लिखते है कि ''अपरिग्रह की वृति का अर्थ यह है कि अपनी आवश्यकता की वस्तु भी जो मैं रखता हुँ, वह अपने स्वामित्व के लिए नहीं रखता। अपनी आवश्यकता की वस्तु तो रखता हुँ, परन्तु आवश्यकता की वस्तु पर मेरा अपना स्वामित्व नहीं।'' अर्थात् सर्वोदयी विचारधारा के अनुसार जिनके पास अधिक पूंजी है, उन्हें अपनी सम्पति त्याग देनी चाहिए। इसमें सर्वोदय में साम्यवाद के सिद्वान्त निहित है अर्थात् योग्यता अनुसार कार्य व आवश्यकता अनुसार वेतन देना। इसके तहत व्यक्तियों में धन एकत्रित करने की प्रवृत्ति समाप्त होगी तथा गरीबी, भूखमरी भी समाप्त हो जायेगी।

सर्वोदय के साधन

सर्वोदय को लाने के लिए निम्न साधनों को अपनाया जा सकता है–जैसे हृदय परिवर्तन, जीवन शुद्वि, साधन शुद्वि और प्रेम का अधिकतम विस्तार। सर्वोदय गांधीजी के साधन और साधनों की श्रेष्ठता में विश्वास करता है अर्थात् राजनीतिक आध्यात्मिकरण आचार्य विनोबा भावे के शब्दों में सर्वोदय की मान्यता है– जो तोकूँ कांटा बुवै, ताहिं बोय तू फूल''। पत्थर का जवाब पत्थर से देने में कौनसी क्रांति हुई है? यहाँ पर सर्वोदयी विचारकों ने कहा क्रांति दुश्मनों को गले लगाने में, क्रांति है, अत्याचारी को क्षमा करने में , क्रांति है, गिरे हुए को ऊपर उठाने में क्रांति है। सर्वोदयी गांधीवाद की तरह ही हिंसा, क्रांति और वर्ग संघर्ष को शिरे से नकारता है। इनमें हिंसा पर अहिंसा द्वारा विजय प्राप्त करना, पाप से घृणा करनी चाहिए, पापी से नहीं। सर्वोदयी विचारकों के अनुसार, जब तक लोगो के हृदय नहीं जीते जाते है, स्थायी सुख प्राप्त नहीं हो सकता। इसीलिए सर्वोदय हिंसा व बल प्रयोग का निषेध करते हुए ग्रामदान, भू–दान, सम्पति दान आदि नवीन साधनों का समर्थन करता है। आर्थिक असमानता को दूर करने के उपायों में सर्वोदयी विचारकों ने सबसे अच्छा साधन भूदान को माना है। जिसे आचार्य विनोबा भावे ने भूदान का नाम दिया अर्थात् अधिक भूमि वाले लोग स्वेच्छा से भूमिहीनों को भूमि का दान करें। भूदान यज्ञ के तहत लोगों के हृदय को बदलकर स्वयं ही यह अनुभव करने लगे कि इस भूमि पर हमारा कोई अधिकार नहीं होगा। स्वंय श्री जयप्रकाश नारायण ने इस सन्दर्भ में कहा है कि ''आर्थिक व सामाजिक क्रांति लाने का यह एक गांधीवादी ढंग, एक नई जीवन विधि का सैद्वान्तिक और व्यावहारिक रूप और एक नया सामाजिक दर्शन है। यह एक नवीन मानवता और एक नवीन सभ्यता का श्रीगणेश है।'' आचार्य विनोबा भावे ने भूदान आन्दोलन के सन्दर्भ में कहा था कि ''यदि तुम्हारी भावना में परिवर्तन आ जाने और तुम स्वेच्छा से अपने से कम भाग्यशाली भाइयों में भूमि को एक लालची की तरह नहीं वरन् इस तरह जैसे एक पिता अपने पुत्र को देता है, बांटने लगो, यदि तुम उनकी सेवा करने व उनके सुख व दुःख के भागी बनने लगे तो हमारे सभी वर्तमान् दोष समाप्त हो जायेंगे।''स्वयं विनोबा भावे के प्रयासों से लोगों ने बड़ी मात्रा में अपनी भूमि भूमिहीनों को दान में दिलवायी थी।

गांधीवाद व सर्वोदय साम्यवाद के जैसे ही पीड़ा व शोषण का उन्मूलन चाहती है। ये राज्यविहीन समाज की स्थापना चाहते हैं परन्तु गांधीवाद व सर्वोदयी दर्शन सर्वहारा वर्ग की तानाशाही का विरोध करती है। गांधीवाद व सर्वोदय के माध्यम में बिना रक्तपात, युद्ध, आतंक, नक्सलवाद एवं हिंसा के आर्थिक समानता स्थापित कर सकते हैं। यदि हम इस पथ पर चलते तो आज धन एकत्रित करने की इनकी लालसा पैदा ही नहीं होती।

निष्कर्ष एवं सुझाव

गांधीवाद एवं सर्वोदय में बल प्रयोग की आवश्यकता ही नहीं पड़ती, स्वार्थ की भावना पैदा ही नहीं होती, हिंसा नहीं फैलती, आतंक नहीं फैलता, पर्यावरण प्रदूषण नहीं होता, बेरोजगारी व गरीबी दूर होती, भूमिहीनों के पास भी भूमि होती, एक विश्व की स्थापना होती, राष्ट्रों द्वारा एक–दूसरे पर आक्रमण नहीं होता, आपसी भाईचारा बढ़ता, अमीर व्यक्ति अधिक खर्चीले प्रकृति के नहीं होते, आपसी द्वैष भावना खत्म होती, सभी धर्मों में सौहार्द होता, इससे गरीबों का शोषण खत्म होता, बेरोजगारी दूर होती, अन्ध–आधुनिकीकरण नहीं होता, समरसता से विकास होता, आत्म–हत्याओं का दौर खत्म होता, अत्याचार खत्म होता इत्यादि। इसके लिए राज्य के नीति निर्देशक तत्वों

को भारतीय संविधान में स्थान दिया गया है परन्तु आज भी उन्हें पूर्ण रूप से लागू करने में सरकारें सफल नहीं हो सकी हैं। यदि नीति निर्देशक तत्वों को पूर्ण रूप से लागू कर दिया जाये तो गाँधीवाद एवं सर्वोदय की अवधारणा सफल हो जायेगी।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

डॉ. श्याम मोहन अग्रवाल ''गांधी एवं अम्बेडकर : राजनीतिक एवं सामाजिक विचार''– रितु पब्लिकेशन जयपुर, संस्करण 2000

गांधी एम.के. ''सर्वोदय'' नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद, 1963

शंकर राव देव '' सर्वोदय का इतिहास और शास्त्र'' सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली, 1971

दारा धर्माधिकारी ''सर्वोदय दर्शन'' सर्वसेवा संघ, काशी,1957

बबल भाई मेहता ''सर्वोदय की सुनो कहानी'' अखिल भारत सर्व सेवा संघ राजघाट, काशी,1955

गोपीनाथ धवन '' सर्वोदय तत्व दर्शन'' सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन, नई दिल्ली

विनोबा भावे ''सर्वोदय योजना'' सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन, नई दिल्ली

सिंह डॉ. दशरथ ''गांधीवाद को विनोबा की देन'' बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी, पटना, 1975

डॉ. राधेश्याम कौशिक एवं डॉ. मुख्त्यार अली''राजनीति शास्त्र के मूल सिद्वान्त (सं. प्रो. धर्मचन्द जैन) जैन विश्व भारती संस्थान, लाडनूं

डॉ. मनोज चतुर्वेदी, महात्मा गांधी का सर्वोदय दर्शन, राजस्थान पत्रिका पृ.1 नागौर संस्करण 25 सितम्बर 2005

अरूण रंजन''सर्वोदय यानी गांधी की एक और हत्या'' रविवार, आनन्द बाजार पत्रिका प्रकाशन जून, 1978

वी.पी. वर्मा – भारतीय राजनीतिक चिन्तक

आर.सी. अग्रवाल राजनीतिक शास्त्र के सिद्वान्त एस चन्द एण्ड़ कम्पनी, नई दिल्ली